जब कोई जानवर बढ़ता है

मिलिसेंट ई. सेल्सम

चित्र: जॉन कॉफ़मैन

जब कोई जानवर बढ़ता है

जब कोई जानवर बढ़ता है
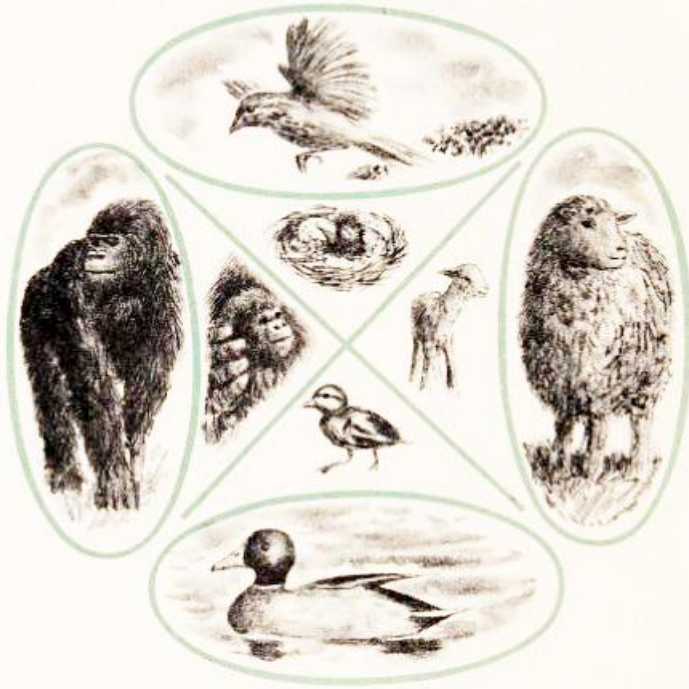
मिलिसेंट ई. सेल्सम

चित्र: जॉन कॉफ़मैन

यह एक बेबी गोरिल्ले की कहानी है.

वो बहुत छोटा और कमजोर है.

वो सिर्फ एक दिन का है.

और यह एक बेबी मेमने की कहानी है जो बड़ा होकर भेड़ बनेगा.

अभी आधे घंटे पहले ही इस मेमने का जन्म हुआ है.

लेकिन पैदा होते ही वो अपने लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा हो सकता है.

बेबी गोरिल्ला बढ़ेगा.

और मेमना भी बढ़ेगा.

लेकिन वे दोनों अलग-अलग तरीकों से बढ़ेंगे.

कुछ जानवर धीरे-धीरे बढ़ते हैं, जैसे वो
गोरिल्ला जो शुरू में बिल्कुल लाचार होता है.

और कुछ जानवर मेमने की तरह तेजी से बढ़ते हैं.

पक्षी भी अलग-अलग तरीकों से बढ़ते हैं.

जब अंडे से गौरैया बाहर आती है,

तब वो देख नहीं सकती है

और उसके पंख नहीं होते हैं.

लेकिन एक बेबी बत्तख अपने अंडे से निकलने के बाद

तुरंत चलने लगती है और तैरने लगती है.

वैसे अलग-अलग दरों से सभी जानवर बढ़ते हैं.

बाद में वे बड़े और बड़े होते जाते हैं.

और बड़े होने के बाद यह जानवर

अपनी खुद की देखभाल करने में सक्षम बन जाते हैं.

बेबी गोरिल्ला की मां अपने बच्चे को दूध पिलाती है.

बच्चा अपनी माँ को कस कर पकड़ता है.

रात में बेबी गोरिल्ला अपनी मां के साथ शाखाओं के घोंसले में सोता है.

वो हर समय अपनी माँ के साथ रहता है.

भेड़ की माँ के पास भी अपने बच्चे के लिए दूध होता है.

जल्द ही मेमना दूध का सही स्थान खोज लेता है.

वो गर्म दूध से अपना पेट भरता है.

उससे उसे नींद आ जाती है.

मेमना दूध पीता और सोता है,
फिर दूध पीता और फिर सोता है.

मां और शिशु गोरिल्ला अकेले नहीं हैं.

वे जंगल में अन्य गोरिल्लों के साथ रहते हैं.

गोरिल्लों का समूह आराम कर रहा है.

उन्होंने अभी-अभी बहुत सारे पत्ते, तने और जड़ें खाई हैं.

वे एक नई जगह पर जाने के लिए तैयार हैं.

पीठ पर चांदी के बालों वाला बड़ा, बूढ़ा गोरिल्ला उन्हें संकेत और आदेश देता है.

वो उनका नेता है.

गोरिल्ला माँ अपने बच्चे को एक हाथ में उठाती है और उसे अपने सीने के पास ले जाती है.

अब वो दो पैरों और एक हाथ पर ही चलती है.

भेड़ की माँ भी अकेली नहीं है.

वो भी एक झुंड में कई अन्य भेड़ों और उनके मेमनों के साथ रहती है.

मेमना अपनी माँ के पीछे-पीछे चलता है.

वो माँ साथ-साथ चलता है.

वो घास कुतरना सीखता है.

झुंड में सबसे बूढ़ी माँ भेड़ बाकी को चलने के समय संकेत देती है.

वो उनकी नेता है.

भेड़ की माँ दूसरी भेड़ों का पीछा करती है.

भेड़ का बच्चा अपनी माँ का पीछा करता है.

बेबी गोरिल्ला बढ़ता और बढ़ता है.

अब वो तीन महीने का है.

अब जब उसकी मां उसे जमीन पर रखेगी
तो वो रेंगकर दूर जा सकेगा.

लेकिन बहुत दूर नहीं.

अगर वो ऐसा करेगा, तो गोरिल्ला माँ उसे
वापस अपनी तरफ खींच लेगी.

मेमने का बच्चा अभी कुछ ही हफ्ते का ही है.

जब वो बहुत दूर चली जाती है, तब भेड़ की माँ
"बाआ" कहती है.

और फिर भेड़ का बच्चा अपनी माँ की तरफ
दौड़ता है.

और जब भेड़ का बच्चा खो जाता है, तो वो भी
"बाआ" कहता है.

तब भेड़ की माँ उसकी पुकार सुनती है और
उसे खोजने निकलती है.

तीन महीने का बच्चा गोरिल्ला अपनी मां की पीठ पर सवारी करने लगता है.

सवारी करते समय वो पत्तियों को अपने हाथों से तोड़ता है.

कभी-कभी वो किसी पौधे को पकड़ता है और उसे अपने मुंह में भर लेता है.

अब उसके दांत हैं.

वो पत्तियों और तनों को चबा सकता है.

अब छोटा मेमना बहुत कम दूध पीता है और वो अधिक-से-अधिक घास खाता है.

बेबी गोरिल्ला बढ़ता रहता है.

अब वो छह महीने का है.

उसे अभी भी अपनी माँ का दूध मिलता है,
लेकिन वो अधिक-से-अधिक पौधे खाता है.

अब वो खुद अकेले पेड़ पर चढ़ सकता है.

वो अपनी मां के पीछे-पीछे चल सकता है.
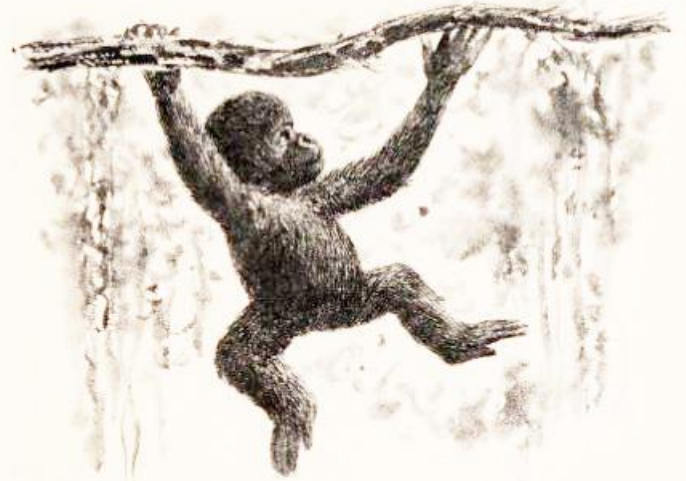
वो झूल सकता है

और उल्टा लटक सकता है.

अब बेबी गोरिल्ला एक साल का हो गया है.

जब उसकी माँ आराम करती है, तब वो अन्य शिशु गोरिल्लों के साथ खेलता है.

उनमें से चार शिशु एक खेल, खेल रहे हैं.

ऐसा लगता है कि वे बच्चों का प्रिय खेल "फॉलो-द-लीडर" (नेता की नकल) खेल रहे हैं.

इसमें नेता एक शाखा के साथ चलता है.

दूसरे उसके पीछे-पीछे चलते हैं.

नेता एक बेल पर चढ़ जाता है.

दूसरे उसके पीछे-पीछे चढ़ते हैं.

नेता नीचे फिसलता है.

दूसरे भी नीचे फिसलते हैं.

नेता एक बेल को पकड़ता है और बाहर की ओर अपना शरीर खींचता है.

उससे बेल टूट जाती है.

और नेता नीचे गिर जाता है.

और उसके पीछे-पीछे उसके सारे मित्र भी नीचे गिर जाते हैं.

वे नीचे की पत्तियों के गट्ठर पर धीमे से गिरते हैं.

वे चट्टानों के ऊपर कूदते हैं.

वे चट्टानों से नीचे कूदते हैं.

अगर कोई उछलकर हवा में घूमता है.

तो दूसरे भी उसी तरह कूदते हैं और
हवा में घूमते हैं.

भेड़ का बच्चा अन्य मेमनों के साथ खेल, खेलता है

जब वो केवल कुछ हफ्ते का होता है.

मेमने भी "फॉलो-द-लीडर" का खेल खेलते हैं.

वे हरे-भरे खेतों में एक-दूसरे के पीछे दौड़ते हैं.

बेबी गोरिल्ले एक और खेल खेलते हैं.

वो खेल "पहाड़ के राजा" जैसा है.

एक बच्चा गोरिल्ला पेड़ के ठूंठ पर बैठता है.

दूसरे उसे धक्का देने की कोशिश करते हैं,
और उससे आकर टकराते हैं!

राजा उन्हें किक मारता है.

वो अभी भी पहाड़ का राजा है.

वो तब तक वहीं रहता है जब तक कि कोई दूसरा
बेबी गोरिल्ला उसे वहां से धक्का नहीं दे देता.
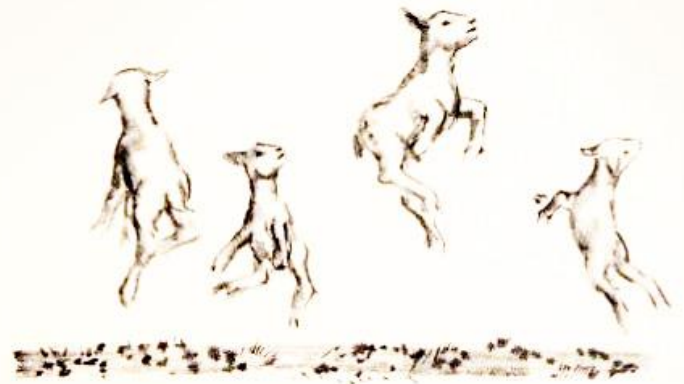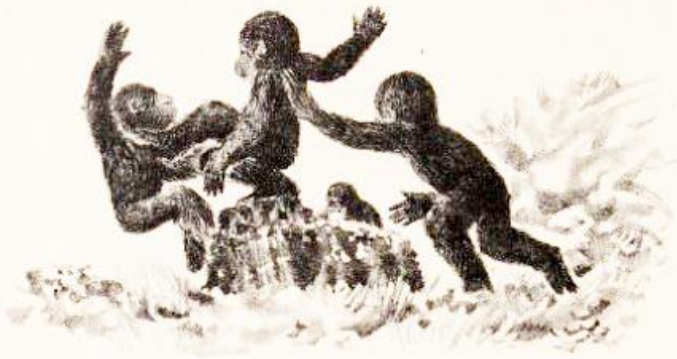
फिर एक नया राजा चुना जाता है.

मेमने भी "पहाड़ के राजा" वाला खेल खेलते हैं.

बेबी गोरिल्ले कुश्ती लड़ते हैं.

यहां दो गोरिल्ले कुश्ती लड़ रहे है.
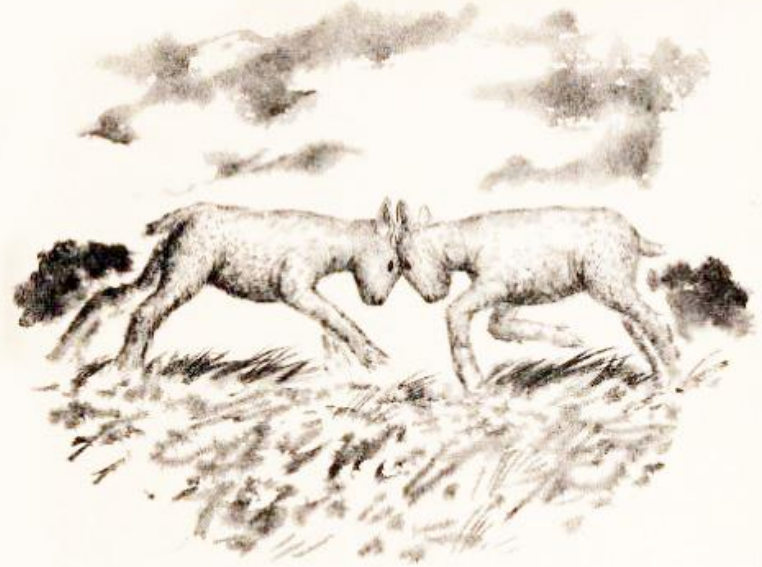
यहां दो भेड़ के बच्चों के बीच लड़ाई हो रही है.

वे एक-दूसरे का सामना कर रहे हैं.

वे अपना सिर नीचा करके एक-दूसरे को चार्ज करते हैं!

उनके सिर आपस में टकराते हैं.

वे दूर चले जाते हैं.

फिर से वे वही दोहराते हैं.

वो सिर्फ एक खेल है!

कभी-कभी बेबी गोरिल्ले खुद से खेलते हैं.

पत्ते उनके खिलौने होते हैं.

यहाँ एक बेबी गोरिल्ला के हाथ में पत्तियों का एक बड़ा गुच्छा है.

वो उसे जमीन पर पटकता है.

वो उसे अपने सिर के ऊपर घुमाता है.

कभी-कभी वो अपने हाथों से पत्तों को तोड़ता है और पत्तों को हरे रंग की बौछार में धीरे-धीरे अपने चारों ओर गिरने देता है.

कभी-कभी वो अपने सिर पर पत्तों को उल्टा रखता है

और फिर अपनी पत्तियों की टोपी के साथ नीचे बैठता है.
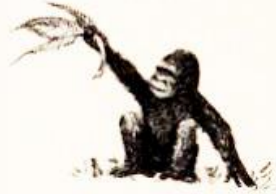
लेकिन मेमने के बच्चे हमेशा एक-साथ खेलते हैं.

समय-समय पर बेबी गोरिल्ला अपनी मां के पास जाकर बैठता है.

कभी कभार भेड़ का बच्चा भी अपनी माँ के पास जाता है.

वो माँ की बगल में एक बड़े पेड़ की छाया में जाकर लेट जाता है.

जब भेड़ की माँ अपने पैरों पर खड़ी होकर चलने लगती है,

तब छोटा मेमना भी उठकर अपनी माँ के पीछे-पीछे चल देता है.
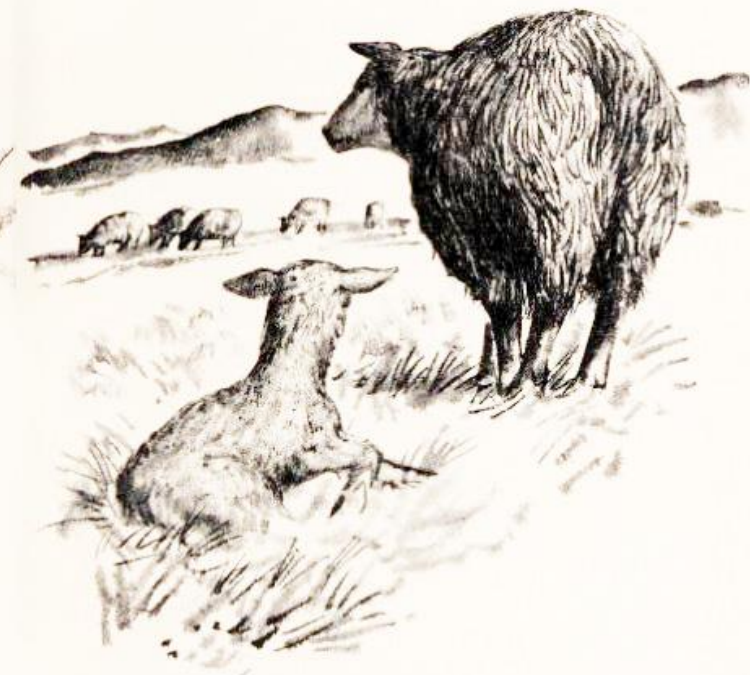
जब माँ गोरिल्ला जंगल में से चलती है,

तब बेबी गोरिल्ला या तो उसकी पीठ पर सवार हो सकता है

या फिर वो अपनी माँ के पीछे-पीछे चल सकता है.

अब बेबी गोरिल्ला को अपनी मां से बहुत कम दूध ही मिलता है.

जब वो डेढ़ साल का होता है, तब वो केवल तने, जड़ और पत्तियां ही खाता है.

लेकिन जब वो नहीं खेल रहा होता है तब भी वो अपनी मां के करीब ही रहता है.

छोटा मेमना केवल कुछ महीनों के लिए ही माँ का दूध पीता है.

उसके बाद वो केवल घास ही खाता है.

अब मेमना बड़ी हो गई है.

जब वो एक वर्ष की हो जाती है, तो उसका अपना खुद का एक छोटा मेमना हो सकता है.

लेकिन बेबी गोरिल्ला अभी भी बढ़ रहा है.

वो बढ़ता और बढ़ता है.

वो तीन साल की उम्र तक अपनी मां के साथ ही रहता है.

अब वो रात में सोने के लिए अपना घोंसला खुद बनाता है.

उसकी मां ने अभी एक और बच्चे को जन्म दिया है.

नया बच्चा छोटा और कमजोर है.

उसे अपनी मां की जरूरत है.

लेकिन युवा गोरिल्ला अब खुद की देखभाल करने के लिए काफी बड़ा हो गया है.

वो बाकी गोरिल्लों के समूह में अपनी जगह बना लेता है.

अन्य जानवरों की तरह पक्षी भी बढ़ते हैं.

ये गौरैया के अंडे हैं.

ये बत्तख के अंडे हैं.

गौरैया का बच्चा

अंडे के अंदर बारह दिनों तक बढ़ता है.

अब वे अपने खोल पर चोंच मार रहे हैं.

वे जल्द ही बाहर आ जाएंगे.

यहाँ नंबर एक है. यहाँ नंबर दो है.

यहाँ गौरैया नंबर तीन है.

और यहाँ गौरैया नंबर चार है.

वे सभी गौरैए हैं.

बच्चा बतख, अंडे के अंदर लगभग एक महीने तक बढ़ता है.

फिर वे अपने खोल को चोंच मारने लगता है.

फिर एक गीली छोटी बत्तख खोल से बाहर निकलती है.

अब एक और बाहर आई है.

फिर एक और, फिर एक और.

वे मल्लार्ड डकलिंग हैं

यानि मल्लार्ड बत्तख के चूज़े हैं.

नन्ही गौरैए घास में छिपे एक घोसले में हैं.

अभी वे छोटी और असहाय हैं.

उनके शरीर पर कोई पंख नहीं हैं.

वे देख नहीं सकती हैं.

वे चल नहीं सकती हैं.

बत्तखें कितनी अलग हैं.

उनके नरम छोटे पंख हैं.

वे देख सकती हैं.

जैसे ही बेबी बत्तखें सूख जाती हैं,

वैसे ही माँ बत्तख वहां आवाज़ करती है.

माँ घोंसला छोड़ देती है.

छोटी बत्तखें माँ का पीछा करती हैं.

माँ बत्तख पानी में चलती है.

वो तैरती है.

बत्तख के चूज़े भी पानी में कूदते हैं.

वे भी तैरते हैं.
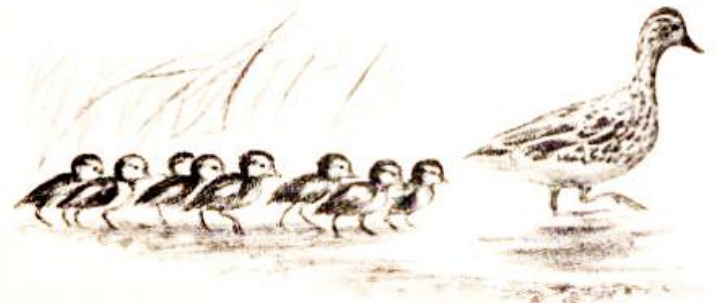
यहाँ गौरैया माँ, भोजन लेकर आई है.

फिर चार सिर ऊपर उठते हैं. चार मुंह एक साथ खुलते हैं.

जिस बच्चा गौरैया का सिर सबसे ऊंचा उठा होता है

और जिसकी चोंच सबसे चौड़ी खुली होती है उसी को खाना मिलता है.

माँ गौरैया फिर उड़ जाती है.

वो और अधिक भोजन लेकर वापस आती है.

फिर दूसरे शिशु गौरैया को भोजन मिलता है.

पिता गौरैया भी खाना लाता है.

माता-पिता दोनों दिन भर व्यस्त रहते हैं

वे कीड़े पकड़ते हैं

और उन्हें वापस घोंसले में वापिस लाते हैं.

जब बहुत ठंढ़ होती है

या जब सूरज बहुत गर्म होता है,

तब माँ गौरैया अपने पंख फैलाती है

वो छोटी गौरैयों के ऊपर छतरी बनती है.

बेबी बत्तखों को खिलाने की जरूरत नहीं पड़ती है.

वे पानी पर अपना भोजन स्वयं ढूंढ लेती हैं.

वे पानी के ऊपर किसी भी कीड़े, भृंग या मक्खियों को खा जाती हैं.

माँ बतख नीचे पानी में झुकती है

और वहां पाए जाने वाले पौधों और बीजों को खाती है.

रात में माँ बतख अपने चूज़ों को किनारे ले जाती है.

वो उन पर अपने पंख फैलाती है और उन्हें गर्म रखती है.

बाप बत्तख अकेले कहीं चला जाता है.

माँ बतख ही अपने चूज़ों की देखभाल करती है.

छोटी गौरैया बड़ी हो जाती है.

यहां पर वे तीन दिन की हैं.

उनके पंख उगने लगे हैं.

उनकी आंखें खुलने लगी हैं.

माँ-बाप गौरैया उनके लिए खाना लाते रहते हैं.

छोटी गौरैए बढ़ती और बढ़ती हैं.

छह दिन बाद,

गौरैया के बच्चे अब खड़े हो सकते हैं.

उनके पंख लंबे होते जा रहे हैं.

उनकी आंखें खुली हुई हैं.

आठ दिन उम्र की गौरैया अच्छी तरह से पंखों से ढकी होती है.

वे घोंसले में घूमती हैं.

वे घोंसले के किनारे पर भी चढ़ जाती हैं.

दस दिन उम्र की गौरैए अब घोंसले से बाहर निकालने वाली हैं.

पहले एक जाती है.

फिर दूसरी.

फिर तीसरी.

और अंत में आखिरी.

अब वे सब चली गई हैं.

लेकिन छोटी गौरैए बहुत दूर नहीं जाती हैं.

वे घोंसले के आसपास की झाड़ियों में ही घूमती हैं.

अगले कुछ दिनों में वे उड़ने लगती हैं.

हर छोटी गौरैया अकेली होती है.

लेकिन हर गौरैया, अपने माता-पिता गौरैया

की आवाज़ सुन सकती है.

और माता-पिता उस गौरैया को सुन सकते हैं.

जब वे "ईप!" करती हैं तो उनके माता-पिता

उन्हें झाड़ियों में पा सकते हैं

और उन्हें खाना दे सकते हैं.

यदि पास में कोई खतरा हो, तो माता-पिता

गौरैया "टिक, टिक, टिक" की आवाज़ करती हैं.

तब गौरया के बच्चे चुप रहते हैं.

फिर उन्हें खोजना मुश्किल होता है.

लेकिन खतरा होने पर बत्तखें कहाँ छिपती हैं?

यहाँ एक कछुआ आ रहा है.

माँ बत्तख चिल्लाती है.

बत्तखें उसके पीछे-पीछे भागती हैं.

लेकिन अब कछुआ उनके बहुत करीब है.

माँ जोर-जोर से चिल्लाती है.

छोटी बत्तखें पानी के पौधों में छिप जाती हैं.

माँ बत्तख अपने पंख फड़फड़ाती है.

कछुआ पीछा करता है, लेकिन माँ बत्तख आगे रहती है.

जब वे बेबी बत्तखों से दूर हो जाती है,
तब माँ बत्तख हवा में उड़ जाती है.

फिर वो वापस जाती है और अपने चूज़ों को बुलाती है.

बच्चे, अपनी माँ के पास आते हैं.

अब वे सुरक्षित हैं.
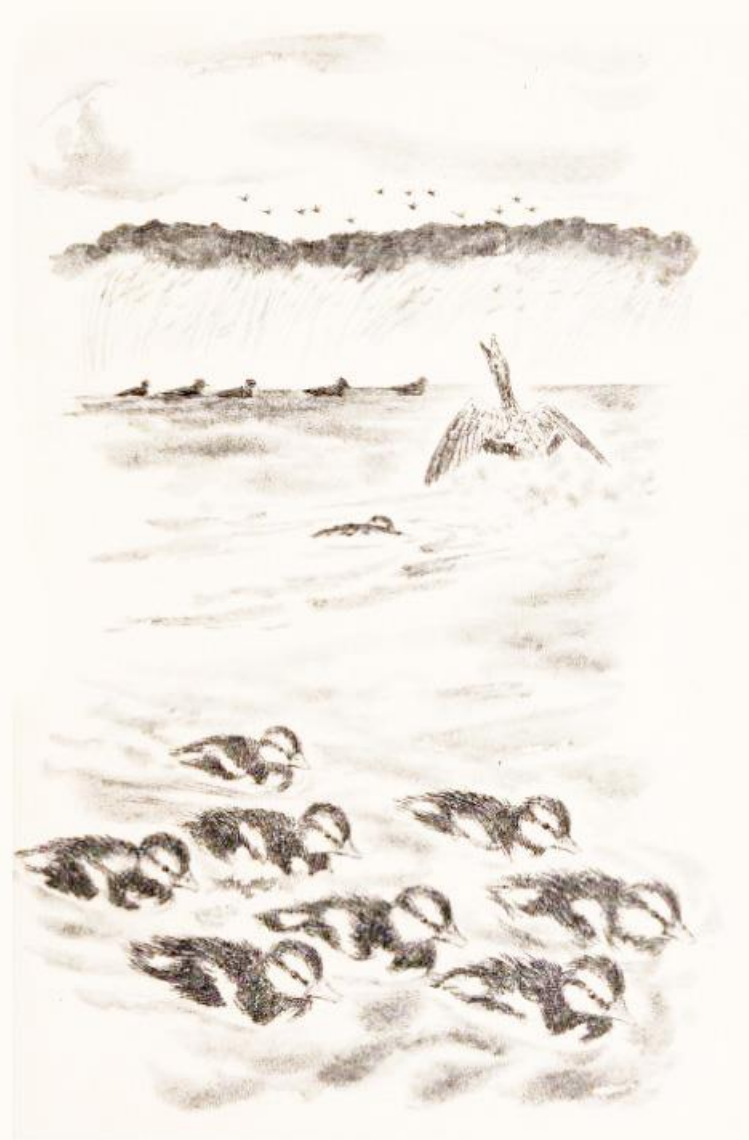
गौरैया के बच्चे सत्रह दिन के होने तक घोंसले के पास की झाड़ियों में ही रहते हैं.

फिर वे छुप-छुप कर बाहर आते हैं.

गौरैया के चारों बच्चे फिर एक-दूसरे को ढूंढते हैं.

अब वे अच्छी तरह उड़ सकते हैं.

अब गौरैए इक्कीस दिन की हैं.

वे अभी भी भोजन के लिए अपने माता-पिता का पीछा करती हैं,

भले ही वे अब अपना भोजन स्वयं ढूंढ सकती हों.

जब पिता गौरैया गाता है, तो वे उसके पास आती हैं.

कभी-कभी वे पिता के सिर पर उतर जाती हैं!

एक महीने में गौरैए बड़ी हो जाती हैं.

अब वे खुद खाना खोजती हैं और खाती हैं.

वे चारों ओर उड़ती हैं.

वे एक-दूसरे से "चिप! चिप!" कहती हैं.

बत्तखों को बड़े होने में अधिक समय लगता है.

गर्मी के सभी दिनों में वे तैरती हैं, खाती हैं और आराम करती हैं.

दो महीने बाद उनके पास उड़ने के लिए सभी आवश्यक पंख होते हैं.

यहाँ एक युवा बतख है,

वो पानी में इधर-उधर घूम रही है.

उसके पंख फड़फड़ा रहे हैं.

एक और सप्ताह बाद बत्तखों का पूरा परिवार उड़ रहा होगा.

बतख परिवार अब बड़ा हो गया है.

युवा बतख अन्य बत्तखों के झुंड में
शामिल हो जाते हैं.

और एक दिन पतझड़ में,
उनके झुंड के झुंड हवा में उड़ जाते हैं.

वे दक्षिण की ओर उड़ जाते हैं.

युवा गौरैए भी पतझड़ में दक्षिण की ओर
उड़ जाती हैं.

अगले वर्ष

पक्षी उत्तर की ओर उड़ेंगे.

छोटी गौरैया और बत्तख

जो एक साल पहले के बच्चे थे

वे अब अपने परिवार पालेंगे.

समाप्त